बिखरते सम्बन्धों की कड़ियाँ

सारांश

भीष्म साहनी का 'कड़ियाँ' उपन्यास स्त्री–पुरूष के जीवन के कड़ी का वि"लेषण है। वैवाहिक जीवन में' में पति–पत्नी के बीन अन्य की उपस्थिति से व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं विभिन्न तरह की समाजिक समस्याओं का जन्म होता है। इन समस्याओं की दि"ाा एवं परिणति का मूल्यांकन लेखक विभिन्न घटनाओं और प्रसंगों के माध्यम से करते है। उपन्यास में महेन्द्र व्यक्तिगत सुख की प्राप्ति हेतु अस्थिर होकर अपने परिवारिक सुख शांति का हास करता है। वह न तो सम्पूर्ण रूप से पा"चात्य संस्कृति को अपना पाता है और न ही भारतीय संस्कृति से विमुख हो पाता है। फलस्वरूप उसके संस्काार और जीवनबोध के बीच टकराहट देखी जाती है। रमे"ा दुबे के अनुसार ''इसी प्रकार जब उनका दूसरा उपन्यास 'कड़ियाँ'पढ़ते हैं तो भीष्म जी कावह आदर्श और नैतिकतावादी यथार्थ प्रकट होने लगता है जो पि"चम की सामाजिकता में खण्डित होते देखते हुए उन्होंने भारतीय समाज में भी महस्सा है। समस्या, मूल्य, नैतिक बन्धन, सामाजिकता, संस्कार में सब मनुष्य का मनुष्यपन साधने की कड़ियाँ है।''[1]

मुख्य शब्द : पाश्चात्य संस्कृति, आत्मबल।

मंजुला भार्मा
सहायक अध्यापक,
हिन्दी विभाग,
टी. डी. बी. कालेज,
रानीगंज, (प0 बंगाल)

प्रस्तावना

महेन्द्र के परिवार में पत्नी और प्रमिला और पुत्र पप्पु है। महेन्द्र जहाँ शारीरिक सुख में वि"वास रखने वाला व्यक्ति है वहीं प्रमिला साधारण , ग्रहस्थी के कामों में उलझी सजावट , बनावट से दूर रहने वाली स्त्री। घर की चाहर दीवारी ही प्रमिला की सीमा है। लेखक के शब्दों में '' महेन्द्र चाहता था कि उसकी पत्नी उसमें', बाहर की दनिया में कुछ ज्यादा दिलचस्पी ले, उसकी पसंद के कपड़े पहने, कभी–कभी अपने आप भी उसके गले में बॉहें डाल दिया करे, कुछ ज्यादा चुलबुलापन दिखाये, पर प्रमिला सारा वक्त घर में और बच्चे में ही खोती चली गयी थी।''[2] महेन्द्र अपने सहकर्मी अविवाहित स्त्री सुषमा की ओर आकर्षित होकर प्रमिला से दूरी बढ़ाता है और अपराध बोध महसूस करते हुए प्रमिला से सारी बात कह डालता है। '' हमारे दफ्तर में एक लड़की है। वह...वह मुझ पर डोरे डालती रहो है और मैं.....मैं उससे मिलता रहा हूँ।''[3] प्रमिला अपना परिवार बचाने के कम में महेन्द्र को सुषमा से दूर रखना चाहती है परन्तु उसके इस प्रयास से बात और बिगड़ती है अलगाव की स्थिति कुछ इस प्रकार बनती है '' मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता, यह शादी भूल थी। मैंने फैसला कर लिया है।''[4] और महेन्द्र पप्पु को बोर्डिग स्कूल में भर्ती कर प्रमिला को उसके पिता के घर भेज देता है। प्रमिला के शब्दों में ''तुम चाहते हो मैं चली जाऊँ? उसने नजदीक आकर पूछा था। तुम मुझे घर से निकाल देना चाहते हो? और महेन्द्र देर रात तम काठ का बुत बना खड़ा रहता था।'', ''हमें कम स कम कुछ देर के लिये अलग रहना चाहिये।''[5]

यहाँ डॉ. कृष्णा पटेल वि"लेषण करते है ''उपन्यास का नायक महेन्द्र आधुनिकता एवं फैसन परास्ती की धारा में इतना आगे निकल गया है कि फिर पीछे लौट पाना उसके लिये असंभव है। परिणाम यह आता है कि पूरे परिवार की कड़ियॉ टूटकर बिखर जाती है। परिवार के एक सदस्य की गलती पूरे परिवार को हिलाकर रख देती है, यह कथानायक महेन्द्र के माध्यम से सिद्ध किया गया है।''[6] डॉ. भारत कुचेकर के अनुसार ''इस उपन्यास में उन्होंने एक ऐसे दम्पत्ति का चित्रण किया है जिनके आपसी सम्बन्ध टूट चुके है। इस उपन्यास के नायक महेन्द्र के विवाहेत्तर यौन सम्बन्धों की कथा इस उपन्यास की मुख्य कथा है। इन दोनों के दाम्पत्य–जीवन की कड़ियाँ टूट जाती है, फिर जुड़ नहीं पाती।''[7] महेन्द्र और प्रमिला के सन्दर्भ में राजे"वर सक्सेना का विचार है'' कड़ियाँ उपन्यास में मध्यवर्गीय संस्कार और संवेदन का संधर्ष है जो महेन्द्र के जीवन को बदल देता है। महेन्द्र सुषमा के फेर में अपनी पत्नी प्रमिला को छोड़ देता है। वह पाप–पुण्य को बकवास मानते हुए भी स्वयं को संस्कारी कहता है, अपने भीतर की हीनताओं से मुक्ति पाने के लिये परिवार के नैतिक बन्धनों को तोड़ डालता है।''[8]

महेन्द्र और सुषमा का रि"ता टिक नहीं पाता और उनका आकर्षण क्षीण होने लगता है क्योंकि '' अब इस उन्माद को छनते देर नहीं लगी।''..... सुषमा महेन्द्र के साथ शादी करने को तैयार हो जाती यदि महन्द्र चाहता तो। पर महेन्द्र शादी करना नहीं चाहता था। इस कारण उनके प्रेम संबंध में एक तरह का खिंचाव आना अनिवार्य था।'' सुषमा महेन्द्र के मनोभाव को समझती है ''महेन्द्र उसके अवलंब को अंदर ही अंदर बालू की भीत का सा अवलंब मानता है। या तो वह किसी दूसरी स्त्रो के प्रति आकृष्ट होकर दूसरी स्त्री की बॉहों में अवलंब ढूँढेगा, या प्रमिला को वापस बुला लेगा।''[10] उत्तरोत्तर महेन्द्र और सुषमा एक दूसरे से दूर होते जाते है। डॉ. गुल"ान कुमार के अनुसार ''उधर, महेन्द्र–सुषमा आकर्षण भी अधिक नहीं रह पाता। दोनों को एक दूसरे में नुक्स नज़र आने लग गये है।''[11]सुषमा अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु वर्मा सर से जुड़ती है ''सतवंत ने जिस अफ्सर वर्मा से महेन्द्र की ि"ाकायत की थी, वही अफ्सर सुषमा पर डोरे डालने लग गया था, डोरे क्या डालने लग गया, उसने उसे दबोच ही लिया था।''[12]

पदोन्नति के साथ महेन्द्र स्वयं को अभिजात्य बनाने की कोि"ा"ा के क्रम में मिसेज भगत से प्रभावित होता है। अब उसे मिरोज भगत के समक्ष सुषमा फीकी लगती है। वह पारिवारिक जीवन की चर्चा करते हुए मिसेज भगत से नजदीकियाँ बढ़ाना चाहता है। भीष्म साहनी वर्णन करते है '' महेन्द्र बड़ी निष्पक्षता से अपने घर के बारे में बात कर रहा था, किस उदारता और विनम्रता से सारा दोष अपने उपर ले रहा था, अपने जीवन की विषमता का कितना तटस्थ मूल्यांकन कर रहा था। हम एक दूसरे के लिए नहीं बने–ठीक ही तो था, यही तो बात थी, मूल में यही तो था, और क्या था।''[13] महेन्द्र अपने ही दूसरे बच्चे को स्वीकार करना नहीं चाहता, वह नाटा से कहता है'' स्त्री बाहर से कही गभ ले आये तो घर में लाकर कौन, बैठा ले? मेरी औरत मर गई क्या? अपने घर में किसी दूसरे की औलाद को लाकर पालूँ? लोग थू–थू करेंगे। डूब न मरूँ इसमें? सड़को पर धूमा करती थी, मैंने खुद देखा है।'' 14 राजे"वर सक्सेना के अनुसार ''आधुनिकता की छाप ने महेन्द्र को विसंगतियों का नमूना बना दिया है।

महेन्द्र की भावुकता पूरे परिवार को तोड़ डालती है। महेन्द्र अपनी मनोग्रंथियों के कारण स्वतः ही विडम्ब–नापूण परिसिथतियों को आमंत्रित करता है।''[15] रोहिणी अग्रवाल का महेन्द्र की वृत्तियों के संदर्भ में विचार है'' ठीक इसी तरह दाम्पत्य सम्बन्धों के विघटन को अपनी लम्पट प्रवृत्ति का परिणाम न मान प्रमिला की जड़ता है और फूहड़ता को दोष देता है जो उसके साथ स्टेटस के अनुरूप घर तथा बाहर की दुनिया से तालमेल बैठाने में असमर्थ है। यूँ मन–ही–मन उसे उस सच्चाई का बोध अव"य है कि प्रमिला वह ठीक वैसे ही अपनी जिन्दगी से निकाल आया है जैसे क्लर्की के जमाने की गली', साईकिल और मित्र–मंडली को।''[16]

साधारण गृहस्थी से जुड़ी प्रमिला सजावट, बनावट से दूर रहने वाली स्त्री है। उससे आधुनिक स्त्रियों की तरह नाज़–नखरे की अपेक्षा करता है किन्तु संस्कारव"ा प्रमिला को यह पसन्द नहीं। ''तो क्या किया करूँ? तुम्हें दिनभर उकसाती रहा करूँ? मुझे एक बार सिखा दो, मैं वही करने लगूँगी।''[17] प्रमिला बार–बार महेन्द्र को बुरा आदमी कहती है तथा उसकी मन स्थति कुछ इस प्रकार की होती है ''मेरी माँ जब मरी थी तो मेरे पिता तीस बरस के थे। उन्होंने दूसरा व्याह ही नहीं किया, उन्होंने कहा, मैं अपने बेटे–बेटी को पालूँगा। और तुम.....अभी तो मैं जीती हूँ।''[18] प्रमिला द्वारा महन्द्र को सुषमा से दूर रखने के प्रयास में महेन्द्र प्रमिला पर हाँथ उठाता है। प्रमिला के शब्दों में ''मेरा कसूर क्या है, मुझे वह तो बताओ मैंने कौन–सा कसूर किया है? मुझे कसूर तो बताते नहीं हो, मुझ से थप्पड स मारते हो।''[19]

नाटे के घर महेन्द्र और प्रमिला के बीच सलह करवाने की व्यवस्था में प्रमिला महेन्द्र के व्यवहारव"ा गर्भती हो जाती है'' प्रमिला से अलग हो जाने के बावजूद वह प्रमिला को मन से निकाल नहीं पाया था। बारह साल का एक साथ का जीवन, उसे सहसा मन से कैसे मिटाया जा सकता था?.....पर भावना और वासना की लहरें एक बाद एक उठती चली जा रही थी' और महेन्द्र उनमें डूबता चला जा रहा था।....'[20] डॉ. गुल"ान कुमार स्पष्ट करते है' ''नाटे के घर एक मुलाकात होती भी है तो चुभन–भरे उदासीन महौल में जिसकी परिणति यद्यपि शारीरिक मिलन के रूप में होती है तथापि अन्त मे वही खालीपन। महेन्द्र, प्रमिला को सोया छोड़कर चुपचाप खिसक लेता है।''[21] ि"ा"ा् के आगमन से प्रमिला की मानसिक अवस्था सुधरती है किन्तु वह पिता के सन्देहात्मक प्र"नों एवं नापसंदी के कारण बच्चे को त्यागने का उपक्रम करती है'' मैं इसे गोद में उठाकर ले तो आई पर इसे फेंकूँ कहाँ? मेरी समझ में नहीं आये। और रो–रोकर मेरा बुरा हाल। उधर रोती जाऊँ, इधर दूध से मेरा कुर्ता भीगता जाय।.....मैं इसे उठाए धर्म"ाला के कुएँ पर जा पहुँची, और इसे चुपचाप कुएँ की सीढ़ी पर लिटा दिया।.....सड़क तक पहुँची तो मुझे इसके रोने की आवाज़ आई।.....मैं पागलों की तरह लौट पड़ी और सीढ़ी पर बैठकर इसे दूध पिलाने लगी। दूध पिलाती जाऊँ।''[22] और रोती जाऊँ।

विवेक द्विवेदी के अनुसार ''प्रमिला ने पहले उसे कहीं फेंकनेकी कोि"ा"ा की थी, परन्तु उसकी ममता ने उसके इन कठोर कदम में बेड़ियाँ डाल दी।''[23] प्रमिला अब परिस्थितियों से लड़ते हुए दवाइयों की दुकान द्वारा जीने के लिए संकल्पबद्ध हुई। प्रमिला के शब्दों में '' मैं क्या जानूँ सन्तो, मेरे दिल से पूछती है तो उसे साथ रहने को मेरा मन नहीं करता।.....पर अब मैं अब मैं उसके पीछे मारी–मारी तो नहीं फिरूँगी। बहुत हो गया है। रूखी–सूखी खिलाकर जैसे–तैसे अपने बच्चों को पाल लूँगी।''[24] डॉ. गुल"ान कुमार वि"लेषण करते है ''प्रमिला पागल हो जाती है। पागलखाने में पहुँती है। एक और संतान को जन्मती है। ताने–मीने सुनकर उसे मारने की नाकाम कोि"ा"ा करके बाप क ही घर में दवाइयों की दुकान खोलकर, भावी जीवन की सीढ़ियाँ, एकाकी ही चढ़ने को विव"ा–बाध्य होती है।''[25] रोहिणी अग्रवाल के शब्दों में ''ऐसा नहींकि आत्मवि"वास से लबालब प्रमिला को लेखक ने आत्मबल जैसी नियामतें प्रदान की हों। चारित्रिक एवं नैतिक दृढ़ता प्रमिला की मूलभूत पहचान रही है जिसके कारण अपनी संकल्पनाओं एवं आय समाजी आस्था से डिगना उसे कभो स्वीकार नहीं रहा।''[26] भीष्म साहनी 'कड़ियाँ' उपन्यास का अन्त कुछ इस प्रकार करते

है ''जिन्दगी का फासला लम्बा था, सतवंत का लगा, जैसे उसकी सहेली दम के लिए किसी पड़ाव पर रूकी है, अभी उसे बहुत दूर जाना है, पर सतवंत को वि"वास था कि वह चल पायेगी, अपने पैरों पर चलती हुई बहुत–सी मंजिलें काट डालेगी।''[27] डॉ. गुल"ान कुमार का विचार है'' बहरहाल, इतनी उथल–पुथल के बावजूद न टूटना, न घुटने टेकना और जीवन–संधर्ष में डटे रहने को जो संदे"ा प्रमिला के माध्यम से लेखक ने दिया है, वो इसे बेहद अर्थपूर्ण , सार्थक उपन्यासों की श्रेणी में खड़ा कर देता है, इसमें संदेह नहीं।''[28]

उपसंहार

"कड़ियाँ' उपन्यास में भीष्म साहनी ने पारिवारिक जीवन के टूटने की कड़ी को चित्रित किया है। महेन्द्र और प्रमिला की गृहस्थी उजड़ जाती है। ि"ाक्षित सरकारी पदाधिकारी महेन्द्र लालसाओं एवं आकांक्षाओं के व"ाीभूत होकर अपने पारिवारिक सुख शांति का हास करता है। महेन्द्र प"चात्य और भारतीय संस्कृति के द्वन्द्व में जीता है। वह अपने आपको आधुनिक की श्रेणी में गिनवाने के लिए उसी के अनुरूप आचरण करता है। महेन्द्र एक ओर जवानी के शेष दिनों में भी भोग कर लेना चाहता है तो दूसरी ओर संस्कारव"ा स्वयं को परे"ाान पाता है। प्रमिला को पसंद करने के बाद ही उसका उससे विवाह हुआ था किन्तु विवाहेत्तर जीवन में प्रमिला उसे जड़, बासी और लिजलिजी लगने लगती है। महेन्द्र पहले सुषमा फिर मिसेज भगत की ओर आकर्षित होता है। वह प्रमिला को उसके पिता के घर भेजकर एवं पप्पू को बोर्डिंग स्कूल में डालकर अकेला रहता है। गृहस्थी में उलझी प्रमिला को पति क्या चाहता है इसकी फिक्र नहों रहती। उसके लिए पति और बड़ो की देखभाल करना ही एकमात्र लक्ष्य रहता है।

प्रमिला वक्त के साथ नहीं बदलती पति द्वारा किये गये चुटल को वह ब"ार्मी मानती है, बन सँवरकर रहना उसे नहीं आता। प्रमिला को पति में रूचि लेना व्यर्थ लगता है। भीष्म साहनी इस उपन्यास में पति–पत्नी के सम्बन्ध विच्छेद की कथा कहते है। हमारे समाज में यह समस्या आज भी प्रत्यक्ष है तथा लेखक हमें बदलते समय एवं नये मूल्यों के संन्दर्भ में विवाह की संस्था के प्रति सचेत रहने के लिए आगाह करते है।

संन्दर्भ

1. दवे रमे"ा, सं. नामवर सिंह , आलोचना त्रैमासिक ' अंक 17,18, वर्ष 2004 पृ.84
2. साहनी भीष्म, 'कड़ियाँ' राजकमल प्रका"ान, नई दिल्ली, 1989, पृ.17
3. वही पृ. 25
4. वही पृ. 44
5. वही पृ. 82,83
6. पटेल डॉ. कृष्णा, 'कथाकार भीष्म साहनी 'चिन्तन प्रका"ाान' कानपुर, 2009, पृ. 113.
7. कुचेकर डॉ. भारत 'भीष्म साहनी व्यक्तित्व एवं कृतित्व ',विनय प्रका"ान, कानपुर 2004, पृ. 48
8. सक्सेना राजे"वर/ठाकुर प्रताप 'भीष्म साहनी व्यक्ति और, 'वाणी प्रका"ान, नई दिल्ली 2005, पृ. 85
9. साहनी भीष्म, 'कडियाँ', राजकमल प्रका"ान, नई दिल्ली, 1989 पृ. 123.
10. वही पृ. 123,124
11. वही पृ. 172
12. वही पृ. 173
13. वही पृ. 140
14. वही पृ. 158
15. सक्सेना राजेवर/ठाकुर प्रताप 'भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना', वाणी प्रका"ान, नई दिल्ली, 2005 पृ. 85,86
16. अग्रवाल रोहिणी, सं. नामवर सिंह 'आलोचना त्रैमासिक अंक 17. 18, वर्ष 2004 पृ. 220
17. साहनी भीष्म 'कड़ियाँ', राजकमल प्रका"ान, नई दिल्ली, 1989, पृ.23
18. वही पृ. 26
19. वही पृ. 66
20. वही पृ. 106,117
21. वही पृ. 172
22. वही पृ. 167, 168
23. द्विवेदी विवके 'भीष्म साहनी', उपन्यास साहित्य 'वाणी प्रका"ान, नई दिल्ली, 1998 पृ. 82.
24. साहनी भीष्म , 'कड़ियाँ', राजकमल प्रका"ान, नई दिल्ली, 1989. पृ. 166
25. वही पृ. 172.
26. अग्रवाल रोहिणी, सं. नाम्वर सिंह 'आलोचना त्रैमासिक अंक 17, 18 वर्ष 2004 पृ. 214.